जैव वविधिता

22 जुलाई 2017

, , : «» «»

— -, -, -, -, - - , : ?

— «» , «» « -»: , , , , « » — , ; , , — ,

खेल न हो तो सीखना नहीं होता।

, - : « -» — - ; , ; - : -, - « » - — - , , ,

«-» - — , ? , -, - — — - : - , - - - :

देखने और दखिने के बीच का अंतर ध्यान से पार होता है। ध्यान केवल आनंद से बना रहता है।

, ,

- , - —

- : , , , , — — , , « » ;

, — - : - ; -, , : , - — ,

जैव वविधिता एक ज्ञान-तंत्र है। वविधिता जतिनी अधकि, वघिटन को उत्तर देने की क्षमता भी उतनी।

? — , , - : , - , , — , « »

- — - , , ,

-- — , , -; - ; - «»

180 — --, , « » ; - , : - ,

बीज केवल पौधा नहीं, ज्ञान का वाहक है। उस बीज के भीतर पीढ़ियों का अनुभव है — वह कौन-सी मट्टिी पसंद करता है, कब बोया जाता है, कैसे काटा जाता है।

- - , , — , , — , -

- — - «-» - ; ,

- - — -,- : « » - : ,- , — , :-,-, , ,

- , ,-, ,-, — ; « » — , — , , — , - :- , — « »

मैं चाहे जितना अच्छा हूँ, मेरी हानि भी है। किंतु यदि मैं चुप रहूँ, तो हानि और अधिक है।

— , , , - :- , , , - :- , ,

? : , - : ?

-, , , « » ; ; « » : ,

मानवता के रूप में हम एक सेकंड हैं। किंतु उस एक सेकंड में हम अरबों वर्षों का संचित ज्ञान मिटा रहे हैं।

: — , « » : -,

: , , , - , — , , ; «» , . , : , — —

,

— - — - , , : - , , - — , , , «» —

? «-», — , , — - ,

एक बच्चे के पत्ती की गंध पहचानने और एक वनस्पति-शास्त्री के प्रजाति-निर्धारण के बीच श्रेणीबद्धता नहीं, सातत्य है।

— — - ; ; -

: - , , ; — - — ; , , , : ,–,

- — , , ; :

- , ; , , , , , , ; , , , , , ? —